आदि पुरूष श्री विराट विश्वकर्मा: सृष्टि निर्माण का विस्तृत वर्णन और उनकी दिव्य शिल्पकारी

I. प्रस्तावना

भगवान विश्वकर्मा को हिंदू धर्म में एक अद्वितीय और पूजनीय स्थान प्राप्त है। उन्हें न केवल एक दिव्य शिल्पकार और वास्तुकार के रूप में venerated किया जाता है, बल्कि वे समस्त निर्माण, कारीगरी, शिल्पकारी, और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों के इष्टदेव भी माने जाते हैं [1]। वे मशीनों और शिल्प उद्योगों के प्रमुख आराध्य हैं, जिनकी कृपा से ही तकनीकी प्रगति संभव हो पाती है [1]। उन्हें 'दुनिया का पहला इंजीनियर' और 'सृष्टि का सर्वोच्च वास्तुकार' कहा गया है, क्योंकि उन्होंने ब्रह्मांड को एक विशिष्ट तकनीक और व्यवस्था पर संयोजित किया [3]। यह रिपोर्ट आदि पुरुष श्री विराट विश्वकर्मा के सृष्टि निर्माण में उनकी गहन भूमिका का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करती है, जिसमें उनके विभिन्न स्वरूपों, ब्रह्मांडीय संरचनाओं के निर्माण, और उनकी अद्वितीय शिल्पकारियों का उल्लेख किया जाएगा।

'आदि पुरुष' की अवधारणा हिंदू धर्म में बहुआयामी है। सामान्यतः, भगवान विष्णु को 'आदिपुरुष' और 'प्रथम पुरुष' माना जाता है, क्योंकि वे सृष्टि के पालनकर्ता और सर्वप्रथम अवतार हैं, जिनकी नाभि से ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की [10]। स्वयंभू मनु को भी प्रथम मानव और मानव जाति के आदि पुरुष के रूप में मान्यता प्राप्त है [10]। हालांकि, प्रस्तुत संदर्भ में 'आदि पुरूष श्री विराट विश्वकर्मा' का उल्लेख विशेष महत्व रखता है। पुराणों में 'विराट विश्वकर्मा' को सीधे 'सृष्टि के रचयिता' के रूप में वर्णित किया गया है [12]। उनका स्वरूप इतना विराट है कि उन्हें 'विराट विश्वकर्मा' भी कहा जाता है [13]। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि 'आदि पुरुष' की अवधारणा केवल 'प्रथम' होने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस परम सत्ता को भी संदर्भित कर सकती है जो किसी विशेष क्षेत्र में सर्वोच्च और मौलिक हो। विश्वकर्मा के संदर्भ में, 'आदि पुरुष' का अर्थ 'सृष्टि के मौलिक वास्तुकार' या 'प्रथम अभियंता' के रूप में समझा जा सकता है, जो ब्रह्मांड को आकार देने और व्यवस्थित करने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं। यह एक प्रकार के पदानुक्रमित या कार्यात्मक 'आदि पुरुषत्व' का प्रदर्शन है, जहाँ भगवान विष्णु सृष्टि के मूल स्रोत हो सकते हैं, और विश्वकर्मा उसके संरचनात्मक प्रकटीकरण के आदि स्रोत हैं।

भगवान विश्वकर्मा का महत्व केवल देवताओं के भवनों और अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि वे ब्रह्मांड के समग्र ढाँचे और व्यवस्था के सूत्रधार हैं [2]। वेदों में उन्हें धरती और स्वर्ग का निर्माता कहा गया है [12]। उनकी भूमिका ब्रह्मा जी द्वारा रचित ब्रह्मांड को 'सजाने, संवारने और सुंदर बनाने' में महत्वपूर्ण है [4]। यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक-दार्शनिक विकास को दर्शाता है। ऋग्वेद में विश्वकर्मा को एक सर्वव्यापी, सर्व-सृष्टा परमेश्वर के रूप में वर्णित किया गया है [9]। वहीं, बाद के पुराणों में उन्हें अक्सर ब्रह्मा के वंशज या देवताओं के शिल्पकार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो ब्रह्मा की प्रारंभिक रचना को व्यवस्थित करते हैं [3]। यह उनके 'सृष्टिकर्ता' के मूल स्वरूप को कम नहीं करता, बल्कि उनके कार्यक्षेत्र को 'ब्रह्मांड के वास्तुकार' और 'दिव्य अभियंता' के रूप में अधिक विशिष्ट बनाता है, जो प्रारंभिक 'सृजन' (ब्रह्मा द्वारा) के बाद 'व्यवस्था' और 'सौंदर्य' प्रदान करते हैं।

II. भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति और स्वरूप

भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति के संबंध में हिंदू पौराणिक कथाओं में विभिन्न मान्यताएं प्रचलित हैं, जो

उनकी दिव्यता की बहु-स्तरीकृत समझ को दर्शाती हैं। अधिकांश हिंदू ग्रंथों के अनुसार, भगवान विश्वकर्मा को संसार के रचयिता भगवान ब्रह्मा का वंशज माना गया है [3]। इस मान्यता के अनुसार, ब्रह्मा के पुत्र धर्म से वास्तुदेव का जन्म हुआ, जिन्हें शिल्प शास्त्र का आदि पुरुष माना गया। इन्हीं वास्तुदेव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा उत्पन्न हुए थे [3]। यह वंश परंपरा उन्हें सीधे सृष्टि के मूल स्रोत से जोड़ती है। कुछ धार्मिक ग्रंथों में उन्हें सीधे भगवान ब्रह्मा का सातवां पुत्र भी माना गया है [3], जो सृष्टि निर्माण में उनकी अधिक प्रत्यक्ष और मौलिक भूमिका का संकेत देता है।

स्कंद पुराण और महाभारत में एक अन्य महत्वपूर्ण वंशावली का उल्लेख मिलता है, जिसके अनुसार धर्म ऋषि के आठवें पुत्र प्रभास का विवाह देव गुरु बृहस्पति की बहन भुवना ब्रह्मवादिनी से हुआ था, और भगवान विश्वकर्मा का जन्म इन्हीं की कोख से हुआ [8]। यह उनके जन्म को विशिष्ट ऋषियों और दिव्य सत्ताओं से जोड़ता है। कुछ ग्रंथों में उन्हें महादेव शिव का अवतार भी बताया गया है [3], जो उन्हें ब्रह्मांड के संहार और पुनर्निर्माण के पहलू से जोड़ता है, जिससे उनकी रचनात्मक शक्ति की व्यापकता प्रदर्शित होती है। वहीं, ऋग्वेद में विश्वकर्मा को एक स्वयंभू, सर्वव्यापी परमेश्वर के रूप में वर्णित किया गया है, जो स्वयं ही पृथ्वी और स्वर्ग का निर्माण करते हैं [9]। इस दृष्टिकोण में, उनकी उत्पत्ति किसी अन्य देवता से नहीं, बल्कि वे स्वयं ही समस्त सृष्टि के आदि कारण हैं। ये विभिन्न उत्पत्ति कथाएँ परस्पर भिन्न प्रतीत हो सकती हैं, किंतु वे विश्वकर्मा की दिव्यता की बहु-स्तरीकृत समझ को दर्शाती हैं। पौराणिक वंशावलियाँ उन्हें स्थापित देवलोक में एकीकृत करती हैं, उनकी भूमिका को ब्रह्मा की सृष्टि के पूरक के रूप में परिभाषित करती हैं। ऋग्वेदिक दृष्टिकोण उनकी मौलिक, अकारण रचनात्मक शक्ति पर जोर देता है, जो उन्हें किसी भी पूर्ववर्ती से स्वतंत्र बनाता है। यह दर्शाता है कि विश्वकर्मा की उत्पत्ति कथाएँ उनके कार्यक्षेत्र की व्यापकता और विभिन्न धार्मिक परंपराओं में उनके महत्व को उजागर करती हैं, जहाँ वे ब्रह्मांडीय सृजन के एक अनिवार्य और मौलिक पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं, चाहे वे प्रत्यक्ष रूप से सृष्टिकर्ता हों या उसके सहायक।

पुराणों में भगवान विश्वकर्मा के पांच प्रमुख स्वरूपों का वर्णन मिलता है, जो उनकी विविध रचनात्मक क्षमताओं और विशेषज्ञताओं को दर्शाते हैं [12]:

1. **विराट विश्वकर्मा:** इन्हें सृष्टि का रचयिता माना जाता है, जो ब्रह्मांड के मूल निर्माता हैं।
2. **धर्मवंशी विश्वकर्मा:** इन्हें महान शिल्प विज्ञान विधाता और प्रभात पुत्र कहा गया है, जो शिल्प और विज्ञान के सिद्धांतों के प्रवर्तक हैं।
3. **अंगिरावंशी विश्वकर्मा:** ये आदि विज्ञान विधाता वसु पुत्र थे, जो प्राचीन वैज्ञानिक ज्ञान के स्रोत थे।
4. **सुधन्वा विश्वकर्मा:** इन्हें महान शिल्पाचार्य और विज्ञान जन्मदाता अथवी ऋषि के पौत्र के रूप में वर्णित किया गया है, जो कला और शिल्प में निपुण थे।
5. **भृंगुवंशी विश्वकर्मा:** ये उत्कृष्ट शिल्प विज्ञानाचार्य थे और शुक्राचार्य के पौत्र थे, जो उन्नत शिल्प कौशल का प्रतिनिधित्व करते थे।

ये पांच स्वरूप केवल अवतार नहीं हैं, बल्कि यह रचनात्मकता और इंजीनियरिंग के विभिन्न पहलुओं का एक व्यवस्थित वर्गीकरण है। यह दर्शाता है कि हिंदू धर्म में 'शिल्प' या 'निर्माण' को एक व्यापक अवधारणा के रूप में देखा जाता है, जिसमें ब्रह्मांडीय स्तर से लेकर विशिष्ट सामग्री-आधारित कला तक सब कुछ शामिल है। विश्वकर्मा इन सभी आयामों के अधिष्ठाता हैं, जो यह स्थापित करते हैं कि सभी प्रकार की रचनात्मकता और कौशल एक ही दिव्य स्रोत से उत्पन्न होते हैं। इन पांच स्वरूपों के माध्यम से विश्वकर्मा की व्यापकता और विभिन्न धातुओं (लोहा, लकड़ी, कांसा, तांबा, सोना, चांदी) में उनके पुत्रों की महारत

का भी उल्लेख मिलता है [19]। भगवान विश्वकर्मा को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है, जिसमें दो, चार या दस बाहुओं और एक, चार या पंचमुखों के साथ उनकी प्रतिमाएं मिलती हैं [8]। यह उनके बहुआयामी कौशल और सर्वव्यापी प्रकृति का प्रतीक है।

तालिका: भगवान विश्वकर्मा के प्रमुख स्वरूप

स्वरूप का नाम	**विवरण/महत्व**	**संबंधित विशेषज्ञता/क्षेत्र**
विराट विश्वकर्मा	सृष्टि के रचयिता	समग्र ब्रह्मांडीय निर्माण
धर्मवंशी विश्वकर्मा	महान शिल्प विज्ञान विधाता और प्रभात पुत्र	शिल्प और विज्ञान के सिद्धांत
अंगिरावंशी विश्वकर्मा	आदि विज्ञान विधाता वसु पुत्र	प्राचीन वैज्ञानिक ज्ञान
सुधन्वा विश्वकर्मा	महान शिल्पाचार्य विज्ञान जन्मदाता अथवी ऋषि के पौत्र	कला और शिल्प
भृंगुवंशी विश्वकर्मा	उत्कृष्ट शिल्प विज्ञानाचार्य (शुक्राचार्य के पौत्र)	उन्नत शिल्प कौशल

III. सृष्टि निर्माण में भगवान विश्वकर्मा की भूमिका

हिंदू पौराणिक कथाओं में, ब्रह्मा जी को सृष्टि का प्राथमिक रचयिता माना जाता है [2]। हालांकि, धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, ब्रह्मा जी ने ब्रह्मांड की रचना तो की, लेकिन इसे 'सजाने, संवारने और सुंदर बनाने' का कार्य भगवान विश्वकर्मा ने किया [4]। उन्हें 'ब्रह्मांड का वास्तुकार' और 'विश्व का पहला अभियंता' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने इस ब्रह्मांड को एक तकनीक और व्यवस्था पर संयोजित किया [4]। यह इस बात पर बल देता है कि विश्वकर्मा की भूमिका केवल 'निर्माण' तक सीमित नहीं है, बल्कि यह 'इंजीनियरिंग' के सार को दर्शाती है - अर्थात्, किसी विचार या कच्चे माल को एक उपयोगी और कुशल प्रणाली में बदलना। वे ब्रह्मांड के 'वास्तुकार' और 'प्रथम अभियंता' हैं क्योंकि उन्होंने ब्रह्मांड को एक 'तकनीक और व्यवस्था' पर संयोजित किया, जिससे उनकी भूमिका ब्रह्मा के 'सृजन' के पूरक के रूप में स्थापित होती है, जहाँ वे अमूर्त को मूर्त और कार्यात्मक बनाते हैं। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण तब मिलता है जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण एक विशालकाय अंडे के आकार में किया और उसे शेषनाग की जिह्वा पर रखा। शेषनाग के हिलने से सृष्टि को नुकसान होता था, जिससे ब्रह्मा जी चिंतित हुए। इस समस्या का समाधान विश्वकर्मा ने ही किया, जिन्होंने मेरु पर्वत को जल में स्थापित कर सृष्टि को स्थिर कर दिया [6]। यह उनकी इंजीनियरिंग क्षमता और सृष्टि को कार्यात्मक बनाने की भूमिका का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सृष्टि की संरचना पंच महाभूतों - क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (अग्नि), गगन (आकाश), और समीर (वायु) - से मिलकर बनी है [31]। विश्वकर्मा ने सृष्टि का निर्माण करते समय, सबसे पहले इन पंच महाभूतों को प्रकट किया और उन्हें व्यवस्थित किया [28]। उन्होंने 'पिंड' (ब्रह्मांडीय शरीर) का निर्माण किया, जो इन तत्वों का

एक व्यवस्थित संयोजन था। यह दर्शाता है कि उनका कार्य केवल इमारतों तक सीमित नहीं था, बल्कि ब्रह्मांड के मूलभूत तत्वों के संगठन और संतुलन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

विश्वकर्मा ने ब्रह्मांड को 14 लोकों में विभाजित और व्यवस्थित किया: सात ऊपर के लोक (भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और ब्रह्मलोक) और सात नीचे के लोक (अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल) [28]। यह विभाजन और व्यवस्था उनकी ब्रह्मांडीय वास्तुकला की विशालता को दर्शाता है, जहाँ प्रत्येक लोक का अपना विशिष्ट कार्य और निवासी हैं।

विश्वकर्मा को देव, दानव और मानव तीनों के 'जनक' (प्रणेता) के रूप में भी वर्णित किया गया है [28]। उन्होंने सृष्टि का सर्जन किया और प्राणियों को उनके गुणों (सत्व, रज, तम) के आधार पर निवास स्थान प्रदान किया [28]। सत्वगुणी जीवों को ऊपर के लोकों (देवता) में, रजोगुणी जीवों को मध्य लोक (मनुष्य) में, और तमोगुणी जीवों को पाताल लोक (दानव) में स्थान दिया गया [28]। यह दर्शाता है कि विश्वकर्मा का सृष्टि निर्माण केवल भौतिक संरचनाओं का निर्माण नहीं था, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक व्यवस्था की स्थापना भी थी। प्राणियों को उनके गुणों के अनुसार लोकों में वितरित करके, उन्होंने कर्म के सिद्धांत और विभिन्न योनियों में आत्मा के विकास के लिए एक ब्रह्मांडीय ढाँचा प्रदान किया। यह उनकी भूमिका को एक 'शिल्पकार' से बढ़कर एक 'ब्रह्मांडीय व्यवस्थापक' की ओर ले जाता है।

तालिका: भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित ब्रह्मांडीय संरचनाएँ

संरचना का प्रकार	**विवरण/महत्व**	**संबंधित पौराणिक संदर्भ**
सृष्टि का स्थिरीकरण	मेरु पर्वत को जल में स्थापित कर पृथ्वी को स्थिर करना	मत्स्य पुराण, स्कंद पुराण
पंच महाभूतों का संयोजन	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश का व्यवस्थित संयोजन कर 'पिंड' का निर्माण	विश्वकर्मा पुराण
चौदह लोकों का निर्माण	भूर्लोक से ब्रह्मलोक (सात ऊपर) और अतल से पाताल (सात नीचे) तक की व्यवस्था	विश्वकर्मा पुराण, मत्स्य पुराण
देव-दानव-मानव का वितरण	सत्व, रज, तम गुणों के आधार पर प्राणियों को विभिन्न लोकों में स्थान देना	विश्वकर्मा पुराण

IV. ऋग्वेद में विश्वकर्मा का सृष्टि-वर्णन

ऋग्वेद के दशम् मंडल में विश्वकर्मा को समर्पित दो महत्वपूर्ण सूक्त (81 और 82) मिलते हैं, जिन्हें 'विश्वकर्मा सूक्त' के नाम से जाना जाता है [9]। ये सूक्त विश्वकर्मा को एक सर्वोच्च, सर्वव्यापी और मौलिक सृष्टिकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो बाद के पौराणिक विवरणों से भिन्न है। इस सूक्त में विश्वकर्मा को

'प्रजापति का अमर पर्याय' कहा गया है, जो उत्तर ऋग्वैदिक काल में विकसित हो रहे सर्वप्रथम देव का प्रतिनिधित्व करते हैं [15]।

ऋग्वेद विश्वकर्मा को ऐसे परमेश्वर के रूप में वर्णित करता है जिनके 'हजार शीर्ष, हजार आँखें और हजार चरण' हैं [17]। वे 'सर्वत्र दिखने वाले, सर्वत्र मुख वाले, सर्वत्र बाहु वाले और सर्वत्र पैरों वाले' हैं [9]। यह चित्रण उनकी सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता को दर्शाता है। वे अकेले ही पृथ्वी और स्वर्ग का निर्माण करते हैं, उन्हें अपनी बाहुओं से 'एक साथ जोड़ते' हैं [16]। यह उन्हें एक अद्वितीय, अद्वैत सृजन शक्ति के रूप में स्थापित करता है। उन्हें 'आँख के पिता, आत्मा में बुद्धिमान' कहा गया है, और वे 'निर्माता, व्यवस्थापक और सर्वोच्च उपस्थिति' हैं [16]। ऋग्वेद में विश्वकर्मा का यह चित्रण एक गहन दार्शनिक अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है, जो वैदिक बहुदेववाद के भीतर एक प्रारंभिक 'एकेश्वरवादी' प्रवृत्ति या एक सर्वव्यापी ब्रह्मांडीय सिद्धांत की ओर इशारा करता है। उनका चित्रण बाद के ब्रह्मा के समान है (चार मुख, चार बाहु), जो दर्शाता है कि विश्वकर्मा की अवधारणा ने बाद के सृष्टिकर्ता देवताओं के विकास को प्रभावित किया। यह उनके मूल महत्व को एक ऐसे परमेश्वर के रूप में स्थापित करता है जो न केवल निर्माण करता है, बल्कि स्वयं ही समस्त अस्तित्व का सार है।

विश्वकर्मा सूक्त में विश्वकर्मा को 'होता-पुरोहित' के रूप में वर्णित किया गया है, जो 'सभी विद्यमान वस्तुओं' का हवन करते हैं, और फिर स्वयं का भी अग्नि में हवन करते हैं [15]। यह एक प्रतीकात्मक क्रिया है जो सृष्टि के लिए आत्म-बलिदान के विचार को दर्शाती है। सूक्त यह भी प्रश्न करता है कि 'वह कौन सा स्थान था जहाँ उन्होंने अपना स्थान लिया? वह क्या था जिसने उन्हें सहारा दिया?' और 'वह कौन सा वृक्ष था जिससे पृथ्वी और स्वर्ग का निर्माण हुआ?' [16]। यह सृष्टि के मूल कारण की रहस्यमय और अगम्य प्रकृति को दर्शाता है। उन्हें 'वाणी का स्वामी' भी कहा गया है और वे सभी वेदों के मूल स्रोत हैं [22]। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि सृष्टि को केवल एक 'निर्माण' के रूप में नहीं, बल्कि एक 'बलिदान' के रूप में देखा जाता है। विश्वकर्मा का आत्म-बलिदान या अपने ही अस्तित्व को अर्पित करना यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड का प्रकटीकरण एक दिव्य त्याग का परिणाम है, जहाँ कुछ 'दिया' जाता है ताकि कुछ 'बन' सके। यह सृष्टि की प्रक्रिया में एक गहरा आध्यात्मिक और कर्मिक अर्थ जोड़ता है, जहाँ निर्माता स्वयं अपनी रचना में विलीन हो जाता है या उसका एक हिस्सा बन जाता है।

V. भगवान विश्वकर्मा की प्रमुख शिल्पकारियाँ और उदाहरण

भगवान विश्वकर्मा की शिल्पकारियाँ उनकी अद्वितीय निर्माण क्षमता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में उनकी केंद्रीय भूमिका का प्रमाण हैं। उन्होंने देवताओं के लिए अनेक भव्य नगरियों और महलों का निर्माण किया, जो उनकी वास्तुशिल्प कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इनमें देवताओं का स्वर्गीय राज्य **स्वर्गलोक** [5] और इंद्रदेव का शानदार **इंद्रपुरी** या **वैजयंत महल** [9] शामिल हैं, जो उनकी शक्ति और ऐश्वर्य के प्रतीक हैं।

उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से एक रावण की प्रसिद्ध सोने की नगरी **लंका** है, जिसे भगवान शिव और पार्वती के निवास के लिए बनवाया गया था [2]। कुछ मान्यताओं के अनुसार, यह उनकी पहली महत्वपूर्ण रचना थी [35]। द्वापर युग में, उन्होंने भगवान कृष्ण की नगरी **द्वारका** का निर्माण किया, जिसे समुद्र के बीचों-बीच स्थापित किया गया था [2]। कलियुग के आरंभ से पूर्व पांडवों के लिए **हस्तिनापुर** और **इंद्रप्रस्थ** का निर्माण भी विश्वकर्मा की देन है [9]। इसके अतिरिक्त, पुरी के प्रसिद्ध **जगन्नाथ मंदिर** में स्थित भगवान

कृष्ण, सुभद्रा और बलराम की विशाल मूर्तियों का निर्माण भी विश्वकर्मा ने ही किया था [2]। उन्होंने सुंदर कांचन महल [14], सुदामा के भवन [35], सरयू नदी के किनारे अनेक घाट [37], तथा सामान्य घर, कुएँ, रथ आदि का भी निर्माण किया [19]।

तालिका: भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित प्रमुख नगरियाँ और दिव्य संरचनाएँ

संरचना/नगर का नाम	विवरण/महत्व	संबंधित युग/कथा
स्वर्गलोक	देवताओं का स्वर्गीय राज्य	सतयुग
इंद्रपुरी/वैजयंत महल	इंद्र का दिव्य निवास	विभिन्न युगों
लंका	रावण की सोने की नगरी (मूलतः शिव-पार्वती हेतु)	त्रेतायुग
द्वारका	भगवान कृष्ण की नगरी	द्वापरयुग
हस्तिनापुर	पांडवों की राजधानी	कलियुग
इंद्रप्रस्थ	पांडवों की राजधानी	कलियुग
जगन्नाथ मंदिर (मूर्तियाँ)	पुरी में भगवान कृष्ण, सुभद्रा और बलराम की विशाल मूर्तियाँ	कलियुग
सुदामा भवन	भगवान कृष्ण के मित्र सुदामा का महल	द्वापरयुग
सरयू घाट	सरयू नदी पर स्नान घाट	प्राचीन काल

विश्वकर्मा देवताओं के लिए शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र और दिव्य वाहनों के भी निर्माता थे, जो ब्रह्मांडीय संतुलन और धर्म की स्थापना के लिए आवश्यक दिव्य शक्तियों के विस्तार का कार्य करते थे [5]। इनमें भगवान विष्णु का अमोघ अस्त्र **सुदर्शन चक्र** [4], भगवान शिव का शक्तिशाली शस्त्र **त्रिशूल** [4], और देवराज इंद्र का **वज्र** शामिल है, जो महर्षि दधिचि की हड्डियों से निर्मित था [2]। उन्होंने कुबेर का उड़ने वाला दिव्य रथ **पुष्पक विमान** भी बनाया [5], जिसका उपयोग बाद में रावण और फिर भगवान राम ने किया। महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा **कर्ण के दिव्य कुंडल** [12] और मृत्यु के देवता यमराज का **कालदंड और पाश** [4] भी उनकी ही देन हैं। विश्वकर्मा की प्रत्येक रचना का एक गहरा प्रतीकात्मक और कार्यात्मक महत्व है। वे केवल 'बिल्डर' नहीं हैं, बल्कि वे ब्रह्मांडीय व्यवस्था के 'संरक्षक' और 'संचालक' भी हैं। उनकी शिल्पकारियाँ दिव्य इच्छा और शक्ति की मूर्त अभिव्यक्ति हैं, जो ब्रह्मांड के सुचारु संचालन और धर्म की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह उनके कार्य को मात्र भौतिक निर्माण से ऊपर उठाकर ब्रह्मांडीय नाटक का एक

अभिन्न अंग बनाता है।

तालिका: भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित प्रमुख अस्त्र-शस्त्र और वाहन

वस्तु का नाम	उपयोग/महत्व	संबंधित देवता/पात्र
सुदर्शन चक्र	भगवान विष्णु का अमोघ अस्त्र	भगवान विष्णु
त्रिशूल	भगवान शिव का शक्तिशाली शस्त्र	भगवान शिव
वज्र	देवराज इंद्र का अस्त्र (दधिचि की हड्डियों से)	इंद्र
पुष्पक विमान	उड़ने वाला दिव्य रथ	कुबेर/रावण/राम
कर्ण के कुंडल	कर्ण के दिव्य कुंडल	कर्ण
यमराज का कालदंड और पाश	मृत्यु के देवता के अस्त्र	यमराज

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ब्रह्मा द्वारा निर्मित विशालकाय अंडे रूपी सृष्टि जब शेषनाग की जिह्वा पर अस्थिर थी, तब विश्वकर्मा ने मेरु पर्वत को जल में स्थापित कर उसे स्थिर किया [6]। यह कार्य उनकी ब्रह्मांडीय इंजीनियरिंग क्षमता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। विश्वकर्मा की रचनाओं की यह विस्तृत सूची (शहरों से लेकर हथियारों तक, और ब्रह्मांडीय स्थिरीकरण तक) उनकी विशेषज्ञता की अविश्वसनीय सीमा को दर्शाती है। उन्हें 'दुनिया के सभी तकनीक के आविष्कारक' [12] और 'कौशल के महागुरु' [2] के रूप में वर्णित किया गया है। यह दर्शाता है कि विश्वकर्मा केवल एक पौराणिक व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे सभी प्रकार के कुशल श्रम, इंजीनियरिंग, डिजाइन और नवाचार के एक सार्वभौमिक प्रतीक हैं। उनकी पूजा आज भी कारीगरों, इंजीनियरों और उद्योगपतियों द्वारा की जाती है [1], जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक कौशल और रचनात्मकता के महत्व को दर्शाती है। यह उनके पौराणिक महत्व को समकालीन प्रासंगिकता से जोड़ता है, जहाँ वे निरंतर नवाचार और उत्कृष्टता के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

VI. निष्कर्ष

भगवान विश्वकर्मा हिंदू धर्म में एक अद्वितीय और बहुआयामी देवता हैं, जो केवल एक दिव्य शिल्पकार नहीं, बल्कि 'ब्रह्मांड के वास्तुकार' और 'विश्व के पहले अभियंता' हैं [4]। उनकी भूमिका सृष्टि के मूलभूत तत्वों के संयोजन से लेकर जटिल ब्रह्मांडीय संरचनाओं (चौदह लोक) और दिव्य नगरियों के निर्माण तक फैली हुई है [28]। ऋग्वेद में उन्हें एक स्वयंभू, सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता के रूप में वर्णित किया गया है [16], जबकि पुराणों में वे ब्रह्मा की प्रारंभिक रचना को 'सजाने, संवारने और स्थिर करने' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं [4]। यह उनके कार्य को अमूर्त सृजन और मूर्त प्रकटीकरण के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित करता है।

विश्वकर्मा की शिल्पकारियाँ, जैसे कि सोने की लंका, द्वारका नगरी, इंद्र का वज्र, और भगवान विष्णु का

सुदर्शन चक्र, उनकी अद्वितीय निर्माण क्षमता और दूरदृष्टि का प्रमाण हैं [2]। ये रचनाएँ केवल भौतिक संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे पौराणिक कथाओं और दिव्य शक्तियों का अभिन्न अंग हैं, जो ब्रह्मांडीय संतुलन और धर्म की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह इस बात पर बल देता है कि प्राचीन भारतीय परंपरा में, 'शिल्प' और 'प्रौद्योगिकी' को केवल भौतिक गतिविधियों के रूप में नहीं देखा जाता था, बल्कि उन्हें दिव्य और पवित्र माना जाता था। विश्वकर्मा की पूजा आज भी कारीगरों, इंजीनियरों और उद्योगपतियों द्वारा की जाती है [1], जो कुशल श्रम, नवाचार और समर्पण के प्रति सनातन धर्म के गहरे सम्मान को दर्शाता है। उनकी पूजा इस विश्वास की निरंतरता है कि सभी कौशल, उपकरण और मशीनें एक दिव्य स्रोत से उत्पन्न होती हैं और उनका उपयोग ब्रह्मांडीय व्यवस्था और मानव कल्याण के लिए किया जाना चाहिए।

भगवान विश्वकर्मा की विरासत समय और संस्कृति से परे है। आज के तकनीकी रूप से उन्नत समाज में भी, उनके सिद्धांत - दूरदृष्टि, बुद्धि, कौशल, और समर्पण [2] - अत्यंत प्रासंगिक हैं। वे हमें अपने चुने हुए शिल्प में उत्कृष्टता प्राप्त करने और समाज के विकास में रचनात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं। एक स्रोत विश्वकर्मा को 'कर्मों का भगवान' कहता है और उल्लेख करता है कि उन्होंने 'कभी विश्राम नहीं लिया' [14]। उनकी सभी रचनाएँ कार्यात्मक, उद्देश्यपूर्ण और उत्कृष्ट हैं। यह विश्वकर्मा को केवल एक निर्माता से ऊपर उठाकर 'कर्मयोग' के एक दिव्य प्रतीक के रूप में स्थापित करता है। वे निरंतर, निपुण और उद्देश्यपूर्ण कार्य के महत्व को दर्शाते हैं। उनकी 'सृष्टि' केवल एक बार की घटना नहीं है, बल्कि निरंतर सुधार, व्यवस्था और रखरखाव की एक प्रक्रिया है। यह दार्शनिक रूप से बताता है कि मानव जीवन में भी, कौशल और समर्पण के साथ किया गया कार्य (कर्म) न केवल भौतिक परिणाम देता है, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति और ब्रह्मांडीय सद्भाव में भी योगदान देता है। विश्वकर्मा की कथाएँ हमें याद दिलाती हैं कि हर रचनात्मक कार्य, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, दिव्य है और उसमें ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने की शक्ति है।

Report Made By: HGVS Mumbai INDIA